अमर उजाला

अपना शहर

देहरादून जलमग्न

पटेल नगर क्षेत्र में टीएचडीसी कालोनी स्थित मंदिर में भरा पानी।

बादल फटने से ज्यादा बारिश

बैरन भई पुरवइया

देहरादून। मौसम विभाग कि मानें तो शनिवार से हो रही लगातार बारिश की मुख्य वजह पुरवा हवा का दबाव है, जिससे नमी अधिक हो गई है। इसके अलावा एक विक्षोभ मध्य प्रदेश के पास और दूसरा राजस्थान के पास बना हुआ है, जो भारी बारिश के अनुकूल है। यही कारण है कि उत्तराखंड में भारी बारिश हो रही है। मौसम विभाग के निदेशक आनंद शर्मा का कहना है कि इस स्थित को लगातार मॉनिटर किया जा रहा है।

221

मिलीमीटर बारिश रिकार्ड हुई सुबह 8.30 से रात 8.30 बजे तक

20°c अधिकतम **18°c** न्यूनतम

रविवार को रहा तापमान

धरती तर और आदमी तरबतर

अमर उजाला ब्यूरो

देहरादून। रविवार को आसमान ने मेघों की इतनी बूंदों को धरती पर भेज दिया कि राजधानी में जिधर देखिए पानी ही पानी और उससे उत्पन्न परेशानियां ही नजर आईं। बरसात तो पूरे प्रदेश में हुई लेकिन दून पर बादलों की नाराजगी अधिक नजर आई। यही वजह है कि पहाड़ पर जहां बादल फटे, वहां उतना पानी नहीं बरसा जितना कि दून में। इसकी वजह से सियासी दलों के दावों और सिस्टम की पोल भी खुल गई। आम आदमी शायद इतना परेशान न होता यदि पानी निकासी से लेकर अन्य व्यवस्थाएं चुस्त-दुरुस्त होतीं।

राजधानी में शुक्रवार रात से लगातार बारिश हो रही है। शनिवार को दिन में कुछ घंटे के लिए मौसम खुला। शाम को फिर से बारिश शुरू हो गई। इसके बाद तो आसमान से लगातार पानी की धार गिर रही है, जिससे धरती तर हो रही है और आदमी तरबतर। उत्तरकाशी और देवप्रयाग में 129 मिलीमीटर, नई टिहरी में 122, हरिद्वार में 108, और नैनीताल में 44 मिलीमीटर बारिश हुई है। जबकि दून में रविवार सुबह 8.30 से रात 8.30 बजे तक 221 मिलीमीटर बारिश रिकार्ड की गई है। मौसम विभाग के अनुसार अगले 36 घंटे में बारिश जारी रहने की संभावना है। पहाड़ों पर भूस्खलन भी हो सकता है। ऐसे में पर्यटक पहाड़ों पर जाने से बचें।

पारा जमीन पर

भारी बरसात से तापमान में गिरावट दर्ज की गई। शुक्रवार तक अधिकतम 32 और न्यूनतम तापमान 21 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया था, वहीं रविवार को अधिकतम तापमान में 12 और न्यूनतम तापमान में तीन डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई। मौसम विभाग के अनुसार रविवार को अधिकतम पारा 20 और न्यूनतम 18 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया।

36 घंटे और जारी रह सकती है बारिश, ऐसा मौसम विभाग ने चेताया है।

थका-थका तन, भीगा-भीगा मन

आने के लिए धन्यवाद, नेताओं से कहना वोट मांगने न आएं

अभ्युदय कोटनाला

12 घंटे बारिश के साथ

अमर उजाला लाइव

देहरादून। बंजारावाला क्षेत्र में हुए जलभराव की सूचना के साथ सुबह आठ बजे रेनकोट पहनकर घर से निकला तो बरसात के भयानक रूप का अंदाजा नहीं था। लेकिन बंगाली कोठी से तालाब बनी सड़कों को देख कुछ अंदेशा हो गया। बंजारावाला पहुंचते ही पुलिया पर खड़े लोग दिखे। जो जलमगभन हुए घरों को देखकर अफसोस कर रहे थे। तसवीरें लेने के लिए जैसे ही कैमरा निकाला तो घरों की छतों पर फंसे लोगों की करुण पुकार सुनाई दी। उनके घरों तक जाने वाली सड़क दरिया बन चुकी थी। ऐसे में दीवारों और छतों के सहारे कूदते हुए किसी तरह एक घर तक पहुंचा। वहां एक युवा पानी निकालने की बेकार कोशिश कर रहा था और बुजुर्ग प्रशासन की व्यवस्था को कोस रहे थे।

बंजारावाला से निकलकर कार्गी रोड की तरफ बढ़ा तो हर जगह भयावह मंजर नजर आया। हर कोई अपने घर में भरे पानी की तस्वीरें खींचने के लिए कह रहा था। उनका इरादा अपनी परेशानी को अखबार के माध्यम से शासन-प्रशासन तक पहुंचाने की थी लेकिन मेरी अपनी सीमाएं थीं।

धर्मपुर क्षेत्र में लोगों के गुस्से का सामना करना पड़ा। वे इस वजह से नाराज थे कि मौके पर पहुंचने में मैंने देरी क्यों की? यह परेशानी से उपजा ऐसा असहाय क्रोध था जिसको केवल नजरअंदाज ही किया जा सकता था। मैं माफी मांगकर अपने काम में लग गया। वे नाराज थे कि उनकी दशा देखने प्रशासन की तरफ से कोई नहीं आया।

धर्मपुर से निकला तो दोपहर के तीन बज चुके थे। इस बीच बरसात ने मेरे फोन को खराब कर दिया। आपदा की सूचनाएं आनी बंद हो गईं। ऐसे में मैं खुद ही शहर की हालत देखने निकल पड़ा। इस बीच कई जगहों पर सड़कें धंसी नजर आईं और जहां-तहां पेड़ गिरे दिखे। आसमान से लगातार गिर रही पानी की धार के आगे मेरे रेनकोट ने हार मान ली थी, लेकिन मैं नहीं हारा था। मेरे मन में अपने कैमरे में लोगों की परेशानियों को कैद करने की वही बेचैनी थी जो घर से निकलने से पहले थी।

शाम के छह बजे नगर निगम में गिरे पेड़ की तस्वीर खींचने के बाद मैंने सोचा कि अब दफ्तर चलता हूं लेकिन तभी फोन की रिंग टोन बज उठी। फोन ऑन करते ही एक रोते हुए व्यक्ति की आवाज सुनाई दी। मेरा घर डूब रहा है, मेरे मवेशी डूब रहे हैं। कोई नहीं आया...मैं क्या करुं...? और सिसकते हुए विनती की कि मेरे घर की एक फोटो ले लो...। अजबपुरकलां क्षेत्र मेरे दफ्तर के रास्ते में नहीं पड़ता। ऐसे में और भीगने की हिम्मत मुझमें नहीं थी। दफ्तर चलने की सोच कर बाइक पर बैठा था लेकिन बाइक आफिस की तरफ आने के बजाए उस सिसकती आवाज की तरफ चल दी।

बताई गई जगह पर पहुंचा तो कोई नहीं मिला। कुछ फोटो खींचने के बाद जब चलने लगा तो एक मकान की खिड़की से धीमी आवाज आई कि आने के लिए धन्यवाद और नेताओं से कह देना कि अब वोट मांगने न आएं...। कुछ और जगहों की तस्वीरें खींचने के बाद मैं करीब आठ बजे आफिस पहुंचा। इस बीच बारिश से मेरा तन तरबतर हो चुका था लेकिन उससे अधिक मन भीगा था...।

शुक्लापुर गांव स्थित हैस्को परिसर में पानी घुसने के बाद पर्यावरणविद् सुंदरलाल बहुगुणा को पीठ पर बैठाकर बाहर लाता कर्मचारी।

पानी से घिरा शुक्लापुर

देहरादून। शुक्लापुर हैस्को के कार्यालय और लैब में पानी घुस गया। पर्यावरणविद सुंदर लाल बहुगुणा की कुटिया पानी के बहाव में बह गई। बहुगुणा को दूसरे स्थान पर शिफ्ट किया गया। हैस्को के डा.अनिल जोशी ने बताया कि पहली बार उनके परिसर में इतनी तेजी से पानी का बहाव हुआ है। मिट्ठी बेहड़ी गांव की सड़क को चौड़ी करने के लिए नहर को अंडरग्राउंड करने से पानी निकासी में दिक्कत आई। सड़क का पूरा पानी शुक्लापुर गांव पहुंचने से हैस्को का पूरा परिसर तालाब में तब्दील हो गया। सरकारी विभाग शहर का सत्यानाश करने के बाद अब गांवों को भी बरबाद करने पर तुले हैं। प्राकृतिक जल निकासी को खत्म किया जा रहा है। इसको लेकर मैं मुख्य सचिव से बात करुंगा। हैस्को का लैब पांच करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया है।